Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कौशल विकास एवं आर्थिक विकास

सरोज कुशवाहा* डॉ. दीपक नेमा**

*** शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत**
**** प्राध्यापक एवं प्राचार्य (वाणिज्य) श्रीरामाकृष्णा कालेज आंफ कामर्स एवं साइंस, भरहुत नगर, सतना (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – कौशल विकास वर्तमान समय में आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। किसी भी देश की आर्थिक प्रगति उसके मानव संसाधनों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। यदि युवाओं को उचित शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक दक्षता प्रदान की जाए, तो वे रोजगार प्राप्त करने के साथ-साथ देश की उत्पादकता में भी वृद्धि कर सकते हैं। भारत जैसे विकासशील देश में बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी तथा गरीबी जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए कौशल विकास अत्यंत आवश्यक है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य कौशल विकास और आर्थिक विकास के मध्य संबंध का अध्ययन करना है। अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार कौशल विकास रोजगार सृजन, औद्योगिक विकास तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि में सहायक होता है। शोध के लिए द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है, जिनमें विभिन्न सरकारी रिपोर्ट, शोध पत्र तथा इंटरनेट स्रोत सम्मिलित हैं।

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कौशल विकास कार्यक्रम युवाओं की रोजगार क्षमता को बढ़ाते हैं तथा आर्थिक विकास को गति प्रदान करते हैं। इसलिए सरकार तथा निजी संस्थानों को कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार करना चाहिए ताकि भारत को आत्मनिर्भर एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सके।

शब्द कुंजी – कौशल विकास, आर्थिक विकास, रोजगार, मानव संसाधन, कौशल भारत।

प्रस्तावना – वर्तमान समय में किसी भी राष्ट्र के विकास का आधार उसकी मानव शक्ति मानी जाती है। यदि देश की जनसंख्या शिक्षित, प्रशिक्षित और कुशल हो, तो वह आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। आर्थिक विकास केवल राष्ट्रीय आय में वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें रोजगार, जीवन स्तर, सामाजिक सुरक्षा तथा उत्पादन क्षमता में वृद्धि भी सम्मिलित होती है।

भारत विश्व की सबसे युवा जनसंख्या वाले देशों में से एक है। यहाँ बड़ी संख्या में युवा कार्यशील आयु वर्ग में आते हैं, लेकिन उनमें आवश्यक तकनीकी और व्यावसायिक कौशल की कमी पाई जाती है। इसी कारण बेरोजगारी और अल्परोजगार जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु कौशल विकास अत्यंत आवश्यक है।

कौशल विकास का अर्थ व्यक्तियों को किसी विशेष कार्य को कुशलतापूर्वक करने हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना है। यह प्रशिक्षण तकनीकी, औद्योगिक, व्यावसायिक तथा प्रबंधकीय हो सकता है। वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि, स्वास्थ्य, निर्माण तथा सेवा क्षेत्र में कुशल श्रमिकों की मांग तेजी से बढ़रही है।

भारत सरकार ने युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए अनेक योजनाएँ प्रारंभ की हैं, जैसे प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY),कौशल भारत अभियान (Skill India Mission), तथा राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC)। इन योजनाओं का उद्देश्य युवाओं को रोजगार योग्य बनाना तथा उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षित मानव शक्ति तैयार करना है।

अध्ययन के उद्देश्य – इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. कौशल विकास की अवधारणा का अध्ययन करना।
2. आर्थिक विकास में कौशल विकास की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. रोजगार सृजन में कौशल विकास के योगदान को समझना।
4. सरकारी योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. कौशल विकास से संबंधित समस्याओं एवं चुनौतियों की पहचान करना।

अनुसंधान क्रियाविधि – यह शोध द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। अध्ययन हेतु निम्न स्रोतों का उपयोग किया गया है:

1. सरकारी रिपोर्ट एवं दस्तावेज
2. शोध पत्र एवं जर्नल
3. पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं
4. इंटरनेट स्रोत एवं वेबसाइट
5. आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट

इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। प्राप्त आंकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन करके निष्कर्ष निकाले गए हैं।

कौशल विकास की अवधारणा – कौशल विकास का अर्थ किसी व्यक्ति की कार्य क्षमता, दक्षता तथा उत्पादकता को बढ़ाना है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को रोजगार योग्य बनाती है तथा उसकी आय में वृद्धि करती है।

कौशल विकास को मुख्यत: तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. तकनीकी कौशल- इसमें मशीन संचालन, कंप्यूटर शिक्षा, इंजीनियरिंग तथा तकनीकी ज्ञान शामिल हैं।

2. व्यावसायिक कौशल – सिलाई, बढ़ईगीरी, इलेक्ट्रिशियन कार्य, प्लंबिंग आदि कार्य व्यावसायिक कौशल के अंतर्गत आते हैं।

3. सॉफ्ट स्किल्स– संचार क्षमता, नेतृत्व क्षमता, समय प्रबंधन तथा टीमवर्क जैसे गुण सॉफ्ट स्किल्स कहलाते हैं।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल शैक्षणिक डिग्री पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यावहारिक कौशल भी आवश्यक हैं।

आर्थिक विकास में कौशल विकास की भूमिका

1. रोजगार सृजन– कौशल विकास युवाओं को रोजगार योग्य बनाता है। प्रशिक्षित व्यक्ति उद्योगों में आसानी से रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। इससे बेरोजगारी की समस्या कम होती है।

2. उत्पादकता में वृद्धि– कुशल श्रमिक कम समय में अधिक एवं बेहतर उत्पादन करते हैं। इससे उद्योगों की कार्यक्षमता बढ़ती है।

3. औद्योगिक विकास– उद्योगों को प्रशिक्षित श्रमिकों की आवश्यकता होती है। कौशल विकास उद्योगों को आवश्यक मानव शक्ति उपलब्ध कराता है।

4. गरीबी उन्मूलन– जब लोगों को रोजगार और उचित आय प्राप्त होती है, तो गरीबी में कमी आती है और जीवन स्तर बेहतर होता है।

5. आत्मनिर्भरता को बढ़ावा– कौशल विकास युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करता है, जिससे वे स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ कर सकते हैं।

6. विदेशी निवेश को प्रोत्साहन – जब किसी देश में कुशल श्रमिक उपलब्ध होते हैं, तो विदेशी कंपनियाँ निवेश करने के लिए आकर्षित होती हैं।

कौशल विकास के लिए सरकारी पहल

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) – यह योजना 2015 में प्रारंभ की गई थी। इसका उद्देश्य युवाओं को उद्योग आधारित प्रशिक्षण प्रदान करना है।

कौशल भारत अभियान (Skill India Mission) – इस मिशन का उद्देश्य भारत को 'Skilled India' बनाना है।

राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) – यह संस्था कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा देती है तथा युवाओं को उद्योग आधारित शिक्षा उपलब्ध कराती है।

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना – इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण देकर रोजगार उपलब्ध कराना है।

साहित्य समीक्षा – विभिन्न विद्वानों एवं शोधकर्ताओं ने कौशल विकास और आर्थिक विकास के संबंध पर अध्ययन किया है।

1. अमर्त्य सेन के अनुसार मानव संसाधन का विकास आर्थिक प्रगति का आधार है।
2. एडम स्मिथ ने श्रम विभाजन एवं कौशल को उत्पादन वृद्धि का प्रमुख कारण माना।
3. NSDC रिपोर्ट के अनुसार प्रशिक्षित युवाओं की रोजगार क्षमता अधिक होती है।
4. विश्व बैंक की रिपोर्ट में बताया गया कि विकासशील देशों में कौशल विकास गरीबी कम करने का प्रभावी साधन है।
5. कई शोध अध्ययनों में यह पाया गया कि तकनीकी शिक्षा और प्रशिक्षण से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।

कौशल विकास में चुनौतियाँ– भारत में कौशल विकास के क्षेत्र में अनेक समस्याएँ हैं:

1. प्रशिक्षण संस्थानों की कमी।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का अभाव।
3. आधुनिक तकनीक की कमी।
4. प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी।
5. उद्योगों एवं प्रशिक्षण संस्थानों के बीच समन्वय की कमी।
6. वित्तीय संसाधनों की कमी।

इन समस्याओं के कारण कौशल विकास कार्यक्रमों का अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता।

सुझाव:

1. ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएँ।
2. उद्योगों के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
3. आधुनिक तकनीकी शिक्षा को बढावा दिया जाए।
4. युवाओं को स्वरोजगार हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाए।
5. महिलाओं के लिए विशेष कौशल विकास कार्यक्रम चलाए जाएँ।
6. डिजिटल शिक्षा एवं ऑनलाइन प्रशिक्षण को प्रोत्साहित किया जाए।

निष्कर्ष – अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कौशल विकास आर्थिक विकास का प्रमुख आधार है। यह न केवल रोजगार सृजन में सहायक है बल्कि उत्पादकता, औद्योगिक विकास एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत जैसे विकासशील देश में युवाओं की बड़ी जनसंख्या को यदि उचित प्रशिक्षण एवं कौशल प्रदान किया जाए, तो देश को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है।

सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ युवाओं को रोजगार योग्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, लेकिन इन योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता है। यदि कौशल विकास कार्यक्रमों को सही दिशा एवं पर्याप्त संसाधन प्रदान किए जाएँ, तो भारत आत्मनिर्भर एवं विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Ministry of Skill Development and Entrepreneurship, Government of India.
2. National Skill Development Corporation (NSDC) Reports.
3. Economic Survey of India.
4. Amartya Sen – Development as Freedom.
5. Adam Smith – Wealth of Nations.
6. World Bank Skill Development Reports.
7. Skill India Mission Documents.
8. Various Research Journals and Articles.

****